पाठ-४

सप्त व्यसन

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

☎ 99260-40137

व्यवहार व्यसन

✻बुरी आदत को व्यसन कहते हैं

निश्चय व्यसन

✻आत्मा के स्वरूप को भूला दे, वे मिथ्यात्व से युक्त राग-द्वेष परिणाम

व्यसन से क्या नुकसान हैं?

- जीव में आकुलता पैदा करते
- दुराचारी बनाते

दर्वित ये सातों व्यसन, दुराचार दुखधाम ।
भावित अंतर-कल्पना, मृषा मोह परिणाम॥

सप्त व्यसन कौन से हैं?

✻जुआ आमिष मदिरा दारी
आखेटक चोरी परनारी।
✻एही सात व्यसन दुखदाई,
दुरित मूल दुर्गति के भाई॥

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

7 व्यसन के नाम

जुआ

मांस भक्षण

मदिरा पान

वेश्या गमन

शिकार

परस्त्री सेवन

चोरी करना

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

द्रव्य जुआ

- हार - जीत पर दृष्टि रखते हुए
  - रुपये पैसे, या
  - किसी प्रकार के धन से खेल खेलना
- शर्त लगाकर कोई काम करना
- दाँव लगाकर अधिक लाभ की आशा या हानि का भय होना

जुए से हानि

- धन, इज्जत आदि की तो हानि होती ही है
- आकुलता बढ़ती है
- मन अस्थिर होने से कोई धार्मिक व लौकिक कार्य नहीं हो पाते हैं
- हिंसादि में पाप प्रवृत्ति सहज होने लगती है

भाव जुआ

अशुभ में हार शुभ में जीत यहै द्यूत कर्म।

पापोदय में → विषाद

पुण्योदय में → हर्ष मानना

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

द्रव्य मांस-भक्षण

- मार कर या मरे हुए जीव का कलेवर खाना

मांस भक्षण से हानि

- पर के प्रति दया परिणाम नष्ट होता
- स्व के विवेक की तो खबर ही नहीं
- अनेक बीमारियाँ होती

भाव मांस-भक्षण

देह की मगनताई, यहै माँस भखिबो ॥

शरीर को अपना मानना

शरीर के पुष्ट होने पर अपना हित

शरीर के दुर्बल होने पर अपना अहित

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

द्रव्य मदिरा पान

✻शराब, भांग, चरस, गांजा आदि नशीली वस्तुओं का सेवन करना

मदिरा पान से हानि

- समाज में बुरा समझा जाता
- बुद्धि हित-अहित के विचार से रहित होती

भाव मदिरा पान

मोह की गहल सों अजान यहै सुरापान

मोह में पड़कर

आत्म स्वरूप से अनजान रहना

मैं कौन हूँ - ये खबर नहीं होना

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

द्रव्य वेश्या गमन

- वेश्या से रमना
- उसके घर आना-जाना

वेश्या गमन से हानि

- समाज में बुरा समझा जाता
- आकुलता होती
- पर भव बिगड़ता

भाव वेश्या गमन

कुमति की रीति गणिका को रस चखिबो

आत्म स्वभाव को छोड़

विषय-कषाय में बुद्धि रमाना

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

द्रव्य शिकार

- जंगल में स्वच्छंद फिरने वाले जानवरों
- व छोटे-छोटे पक्षियों को निर्दय होकर
- किसी भी हथियार से मारना
- व मारकर आनन्दित होना

शिकार से हानि

- पर के प्रति दया परिणाम नष्ट होता
- पर्यावरण का संतुलन बिगडता

भाव शिकार

निर्दय ह्वै प्राण-घात करबो यहै शिकार

तीव्र राग वश ऐसे कार्य
करने के भावों द्वारा

अपने चैतन्य प्राणों का घात करना

द्रव्य परस्त्री सेवन

- अपनी विवाहिता स्त्री के अलावा
- शेष अन्य किसी भी स्त्री के साथ रमण करना

परस्त्री सेवन से हानि

- आकुलता होती
- मन अस्थिर होने से कोई धार्मिक व लौकिक कार्य नहीं हो पाते

भाव परस्त्री सेवन

पर-नारी संग पर-बुद्धी को परखिबो ॥

दूसरों की बुद्धि की परख में

ज्ञान का सदुपयोग मानना

द्रव्य चोरी

- प्रमाद से बिना दी हुई
- किसी वस्तु को ग्रहण करना

चोरी से हानि

- भय बना रहता
- तनावग्रस्त
- अस्थिर चित्त

भाव चोरी सेवन

प्यार सौं पराई सौंज गहिबे की चाह चोरी।

मोह से

पर वस्तु से साझेदारी की चाह, अपनी मनना

त्याग क्रम

✻प्रथम
✻द्रव्य व्यसन का त्याग
✻सम्यग्दर्शन की पात्रता बनती

✻फिर
✻भाव व्यसन
✻आत्म रुचि से आत्म स्वभाव की वृद्धि में आनंदित होने से सहज छूटते